विशद वीतराग शासन जयवंत हो

श्री सुपार्श्वनाथ मण्डल विधान

माण्डला

मध्य : ॐ
प्रथम - 4
द्वितीय - 8
तृतीय - 16
चतुर्थ - 32
कुल : 60 अर्घ्यं

विधान रचयिता-
परम पूज्य साहित्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी मुनिराज

कृति : **श्री सुपार्श्वनाथ विधान**
कृतिकार : परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम-2025, प्रतियाँ -1000
संकलन : स्थविर मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संयोजन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र जैन, दिल्ली -मो.: 9810570747
3. हरीश जैन, दिल्ली - मो.: 9136248971
4. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी मो.: 9416888879
5. नीरज जैन, लखनऊ मो. 94512-51308
6. जैन मंदिर, गुलाब वाटिका, दिल्ली
मो.: 9818570432
मुद्रक : सुगन ग्राफिक्स, इंदौर - मो.: 9302125594

पुण्यार्जक :

00000

कृति : **श्री सुपार्श्वनाथ विधान**
कृतिकार : परम पूज्य साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम-2025, प्रतियाँ -1000
संकलन : स्थविर मुनिश्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संयोजन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र जैन, दिल्ली -मो.: 9810570747
3. हरीश जैन, दिल्ली - मो.: 9136248971
4. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी मो.: 9416888879
5. नीरज जैन, लखनऊ मो. 94512-51308
6. जैन मंदिर, गुलाब वाटिका, दिल्ली
मो.: 9818570432
मुद्रक : सुगन ग्राफिक्स, इंदौर - मो.: 9302125594

पुण्यार्जक :

स्वर्गीय श्री आनंद कुमार जैन की स्मृति में ...

श्रीमती सितारा देवी जैन, श्री आदेश कुमार-ममता जैन

अमन, अंकित जैन, अयांश, अविरा जैन,

मुखर्जी नगर, विदिशा

विनय पाठ (लघु) (दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए् आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।
मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।। ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।। ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।। ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।। ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान !
हे अर्हन्त ! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिनः, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्दः)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।
।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

(दोहा)

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस-छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।

दोहा - अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए।
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर की कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ-सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ति पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की पूजा विधान

"स्थापना"

नगर बनारस में चय करके, मध्यक ग्रीवक से आए ।
सुप्रतिष्ठ माँ पृथ्वीसेना, के सुत जिन सुपार्श्व गाए ॥
देव रत्नवृष्टी करके शुभ, प्रभु की बोले जय जयकार ।
जन्मोत्सव पर बजी बधाई, हर्षित हुआ देव परिवार ॥

दोहा - गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए मोक्ष कल्याण ।
जिन सुपार्श्व का हम हृदय, में करते आह्वान ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं ।

(विधाता छन्द)

ज्ञान अभ्यास जल लाए, तत्त्व ज्ञानी बनें स्वामी ।
जन्म मरणादि त्रय दुखहर, निजानन्दी बनें नामी ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान अभ्यास का चंदन, श्रेष्ठ शीतल सुगंधित हैं ।
भवातप नाश करने में, जगत में जीव का हित हैं ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास के अक्षत, तत्त्व का ज्ञान देते हैं ।
स्व पद अक्षय प्रदायी जो, विशद विज्ञान देते हैं ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! अक्षय पद प्राप्तेय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व के सुन्दर, पुष्प है काम के नाशी ।
शील गुण से सुशोभित कर, बनाएँ मोक्षपुर वासी ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व अभ्यास के चरूवर, कभी हमने नहीं पाए ।
क्षुधा की व्याधि क्षय करने, यहाँ पर आज हम आए ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व अभ्यास के दीपक, ज्ञान पावन जगाते हैं।
मोहतम है अनादी जो, उसे प्रभुजी भगाते हैं ।
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व अभ्यास की पावन, ध्यानमय धूप है सुंदर ।
कर्म वसु नाश कर देती, निरंजन पद विशद देकर ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास के फल से, मोक्ष फल प्राप्त हो जाए ।
मुक्ती रमणी से हो परिणय, चेतना का सरस आए ॥

श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तत्त्व अभ्यास इस जग में, हृदय अपने जगाते हैं ।
अनर्घ्य पद प्राप्त करके वे, स्वयं ही मोक्ष पाते हैं ॥
श्री सुपार्श्व जिनवर की, यहाँ पूजा रचाते हैं ।
मोक्ष के हम बनें राही, चरण में सिर झुकाते हैं ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)-शांती पाने के लिए, देते शांती धार
अष्ट कर्म को नाशकर, पाएँ भवदधि पार ।

''शान्तेय शांतिधारा''

पुष्पाञ्जलि करते विशद, पुष्प लिए ये हाथ ।
जागे भक्ती हृदय में, झुका रहे पद माथ ॥

''पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्''

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

भादव सुदी षष्ठी शुभ आए, प्रभुजी गर्भ कल्याणक पाए ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भाद्रपद शुक्ल षष्ठी दिने गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ सुदी बारस को जानो, प्रभु का जन्म कल्याणक मानो ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस को भाई, जिन सुपार्श्व ने दीक्षा पाई ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥3॥
ॐ ह्रीं श्री ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश्यां तप कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि षष्ठी को स्वामी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥4॥
ॐ ह्रीं श्री फाल्गुन कृष्ण षष्ठी दिने केवल ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातै को स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी ।
जिन सुपार्श्व की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ॥5॥
ॐ ह्रीं श्री फाल्गुन कृष्ण सप्तमी दिने मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

सुप्रतिष्ठ के लाड़ले, पृथ्वी माँ के लाल ।
श्री सुपार्श्व जिनराज की, गाते हैं जयमाल ॥

(ज्ञानोदय छन्द)

यश गौरव गूँज रहा जिनका, धरती से चाँद सितारों तक ।
मंगल होता जिनके द्वारा, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक ॥
लखकर के जिनकी महिमा, सौधर्म इन्द्र भी शर्माया ।
जिनके अनुपम गुण गाने को, खुश हो भक्ती को आया ॥1॥
चय करके मध्ययम ग्रीवक से, प्रभु नगर बनारस में आए ।
माँ पृथ्वी सेना सुप्रतिष्ठ, नृप के गृह में मंगल छाए ॥
भादों शुक्ला षष्ठी तिथि को, अवतरण आपने पाया था ।
फिर ज्येष्ठ शुक्ल की बारस को, जन्मोत्व अवशर आया था ॥2॥

आयू प्रभू बीस लख पूरव, स्वस्तिक लक्षण पद में पाए ।
ऊँचाई दौ सौ धनुष रही, प्रभु हरित वर्ण के कहलाए ॥
वृक्षों की पतझड़ देख प्रभू, मन में वैराग्य जगाए हैं ।
प्रभू ज्येष्ठ शुक्ल की बारस को, पावन संयम अपनाए हैं ॥3॥
तन से चेतन को भिन्न जान, निज आतम में रम जाते हैं ।
फिर फाल्गुन कृष्ण षष्ठी को, निज केवल ज्ञान जगाते हैं ॥
तब धनकुबेर यहाँ आकर के, शुभ समवशरण बनवाता है ।
सौधर्म इंद्र भी आकर के शुभ, जय जयकार लगाता है ॥4॥
गणधर पंचानवे जिनवर के, बलदत्त प्रथम कहलाए है ।
ये ढाई लाख मुनिवर ज्ञानी, जो सद् संयम अपनाए है ॥
या यक्ष विजय यक्षी काली जो, रक्षक देह कहाते हैं ।
प्रभू कूट प्रभाष सम्मेद शिखर, करके विहार फिर जाते हैं ॥5॥

दोह- फाल्गुण वदि सातें प्रभू, करके कर्म विनाश ।
मुक्ती पथ पर बढ़ चले, शिवपुर कीन्हा वास ॥

ॐ ह्रीं सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा- प्रभू की अर्चा जो करें, भक्ती भाव के साथ ।
सुख शांती सौभाग्य पा, बनें श्री के नाथ ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

श्री सुपार्श्वनाथ विधान की अर्घ्यावली

प्रथम वलय :

दोहा - अनंत चतुष्टय प्राप्त कर, बनते हैं अर्हन्त ।
शिव पद पाते हैं विशद, करे कर्म का अन्त ॥

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रभु 'ज्ञानावरणी' कर्म नाश, जो विशद ज्ञान करते प्रकाश ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहित अनंत ज्ञान गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म 'दर्शनावरण' नाश, दर्शन गुण में जो करें वास ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'मोह कर्म' करते विनाश, सम्यकत्व सुगुण करते प्रकाश ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित सम्यकत्व गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'कर्म' अन्तराय' करें नाश, जो वीर्यान्त में करें वास ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ।।4।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहित अनंत वीर्य गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कर्म घातिया कर विनाश, प्रगटाएँ चतुष्टय प्रभू खास ।
जिनकी महिमा जग में अपार, हम वंदन करते बारबार ।।5।।

ॐ ह्रीं घातिया कर्म रहित अनन्त चतुष्टय गुण सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

(दोहा)

तीर्थंकर पद प्राप्त कर, बनते हैं प्रभू आप्त ।
समवशरण में शोभते, प्रातिहार्य हों प्राप्त ।।

(अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

‘तरु अशोक’ है शौक निवारी, समवशरण में मंगलकारी।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥1॥

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष महा प्रातिहार्य सहित समवशरण में विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘सिंहासन’ पर प्रभु जी सोहें, जग जन के मन को जो मोहे।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥2॥

ॐ ह्रीं सिंहासन महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

‘छत्रत्रय’ प्रभुता दिखलाते, तीन लोक में प्रभू कहाते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥3॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘भामण्डल’ है महिमाशाली, प्रभु की जानो शान निराली।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥4॥

ॐ ह्रीं भामण्ड महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दिव्य देशना’ प्रभु सुनाते, प्राणी श्रद्धा ज्ञान जगाते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥5॥

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘दुन्दुभि बाजे’ देव बजाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥6॥

ॐ ह्रीं सुर दुन्दुभी महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

‘देव चँवर’ लेकर के आते, हर्षित होकर स्वयं ढुराते।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ॥7॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चामर महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्पवृष्टि' करते शुभकारी, देव यहाँ आके मनहारी ।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ।।8।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि महाप्रातिहार्य सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य ये अष्ट कहाए, श्री जिन की महिमा दिखलाए ।
प्रातिहार्य जिनवर यह पाते, तीन लोक में पूजे जाते ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट महाप्रातिहार्य सहित समवशरण में विराजित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

(दोहा)

सोलहकारण भावना, भाते हैं भगवान ।
जिसके फल से प्राप्त हो, शिव पद का सोपान ।।

(अथ तृतिय वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

सोलहकारण भावना (चौपाई)

'दर्श विशुद्धी' प्रथम कहाई, जग में जो आवश्यक गाई ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धिभावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विनय सम्पन्न' भावना भाए, जग प्रभुता वह प्राणी पाए ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनतिचार व्रत' शील का धारी, कहा गया शिव का अधिकारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ।।3।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'अभीक्षण ज्ञानोपयोग' पाए, विशद ज्ञान वह जीव जगाए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥4॥

ॐ ह्रीं अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना बलेन श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'संवेग भाव' का धारी, ज्ञानी जग में मंगलकारी।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥5॥

ॐ ह्रीं संवेग भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव होय 'शक्ति सः त्यागी', जग में कहा गया बड़भागी।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥6॥

ॐ ह्रीं शक्तिस्यत्याग भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो 'शक्ति सः तप' को पाए, अपने सारे कर्म झराए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥7॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साधु समाधि' जो करें कराए, प्राणी अतिशय पुण्य कमाए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥8॥

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वैय्यावृत्ती' जिसको भाए, वह अपना सौभाग्य जगाए।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥9॥

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्यकरण भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हद् भक्ती' है शुभकारी, भवि जीवों के पाप निवारी।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्ती भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आचार्य भक्ती' करने वाले, जग में होते जीव निराले।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥11॥

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ती भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ती करें कराएँ, सम्यक् ज्ञान जीव वे पाएँ ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥12॥

ॐ ह्रीं बहु श्रुतभक्ती युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रवचन भक्ती की महिमा न्यारी, सम्यग्ज्ञान प्रकाशनधारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥13॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ती भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक अपरिहार्य के धारी, होते हैं शिव के अधिकारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥14॥

ॐ ह्रीं आवश्यका परिहाणि भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मार्ग प्रभावना ऋषिवर पाएँ, जीवों को सत् मार्ग दिखाएँ ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥15॥

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते 'प्रवचन वत्सल' धारी, जीव होय शिव के भर्त्तारी ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥16॥

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य भावना सोलह भाते, तीर्थंकर पद वे नर पाते ।
भव्य भावना जो यह भाएँ, वे तीर्थंकर पदवी पाएँ ॥17॥

ॐ ह्रीं दर्श विशुद्धयादि षोडशकारण भावना युत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

(दोहा)

पूज्य हैं बत्तिस देव से, तीर्थंकर भगवान ।
जो प्रभु की अर्चा करें, पावें शिव सोपान ॥

॥ अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

"बत्तिस देव पूजित जिन" (मोतियादाम छन्द)

इंद्र कहलाए असुर कुमार, साथ में लाए निज परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं असुर कुमारेण सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र कहलाए नागकुमार, भक्त बन आए सह परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।2।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र विद्युत कुमार शुभकार, भक्त को आए सह परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र कहलाए सुपर्ण कुमार, भक्ति को आए प्रभु के द्वार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहलाए अग्निकुमार, करे जिन पूजा जो शुभकार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।5।।

ॐ ह्रीं अग्नि इंद्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहलाए वात कुमार, प्रभू पद पूजे मंगलकार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ।।6।।

ॐ ह्रीं वातकुमार परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहाए स्तनितकुमार, करे भक्ती से जिन उपकार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥7॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र है पावन उदधिकुमार, भक्ति का नहीं है पारावार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥8॥

ॐ ह्रीं उदधिकुमार परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र कहलाए दीपकुमार, दीप से पूजे सह परिवार ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥9॥

ॐ ह्रीं दीपेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए दिक्कुमार शुभ इन्द्र, प्रभू के पूजे चरणारविन्द ।
करें जिन अर्चा बारम्बार, चरण में आके बारम्बार ॥10॥

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का किन्नर देव, प्रभू के पूजे चरण सदैव ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥11॥

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुष व्यंतर का है इन्द्र, पूजता प्रभु के चरणारविन्द ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥12॥

ॐ ह्रीं किम्पुरुष परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ
जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरग व्यंतर का है इन्द्र, साथ में भक्ति करे अनिन्द्र ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥13॥

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का गाया यक्ष, प्रभु की भक्ति में है दक्ष ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥14॥

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का है गंधर्व, पूजते देव प्रभु पद सर्व ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥15॥

ॐ ह्रीं गंधर्व इंद्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का राक्षस जान, करे जो भाव से प्रभु गुणगान ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥16॥

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत व्यंतर का महिमावान, इन्द्र प्रभु भक्ति करे महान ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥17॥

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र व्यंतर का रहा पिशाच, करे प्रभु भक्ति जो नाच-नाच ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥18॥

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र ज्योतिष का चंद्र कहाय, प्रभु भक्ति करने को आय ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥19॥

ॐ ह्रीं चंद्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य ज्योतिष का इन्द्र महान, प्रभु की पूजा करे विधान ।
करे जिन अर्चा अपरम्पार, चरण में आके बारम्बार ॥20॥

ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

सौधर्म इन्द्र कहलाए, जो जिन पूजा को आए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥21॥

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्र शुभकारी, जिन भक्त है मंगलकारी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥22॥

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत कुमार कहलाए, जिन अर्चा कर हर्षाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥23॥

ॐ ह्रीं सानतकुमार इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र मनहारी, जग जीवों का उपकारी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥24॥

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है ब्रह्म इन्द्र सद्ज्ञानी, जिन भक्त परम कल्याणी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥25॥

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र है महिमाशाली, जिन भक्ति जाय न खाली ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥26॥

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुकेन्द्र प्रभु को ध्याए, जो पूजा पाठ रचाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥27॥

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र प्रभु को ध्याए, अतिशय जिन महिमा गाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥28॥

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र परम अनुरागी, जिन पद पूजक बड़भागी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥29॥

ॐ ह्रीं आनत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र भक्ति को आए, नत हो जिन महिमा गाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥30॥

ॐ ह्रीं प्राणत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र की महिमा न्यारी, जिन भक्त है मंगलकारी ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥31॥

ॐ ह्रीं आरण इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्चुतेन्द्र रहा जग जाना, जिनवर का भक्त पुराना ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥32॥

ॐ ह्रीं अच्युत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस ये इन्द्र कहाए, जिनवर के अनुचर गाए ।
प्रभु की जो महिमा गाए, पद सादर शीश झुकाए ॥33॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय
श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- गुण गाने जिनराज के, भक्त हुए वाचाल।
श्री सुपार्श्व जिनराज की, गाते हैं जयमाल ॥

(शम्भू छन्द)

सुर नर मुनि गणधर आदिक सब, जिनका ध्यान लगाते हैं।
जिनवर सुपार्श्व जग में पावन, यशगान आपका गाते हैं ॥
जो ध्यान आपका करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं ।
जो शरण प्राप्त करते प्रभु की, उनके संकट कट जाते हैं ॥1॥
प्रभु स्वर्ग लोक से चय करके, काशी नगरी में चय आए ।
पृथ्वी सेना नृप सुप्रतिष्ठ, के गृह में शुभ मंगल छाए ॥
स्वर्गों के इन्द्र सभी मिलकर, प्रभु के कल्याण मनाते हैं।
पूजा करते हैं भाव सहित, जिनवर की महिमा गाते हैं ॥2॥

भव सुख की जिनको चाह नहीं, वे दुख से भय ना खाते हैं।
वे क्षय करके निज कर्मों को, भव सागर से तिर जाते हैं ॥
है निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप जिनने पाया।
ऐसे अनुपम पद पाने को, अन्तर्मन मेरा ललचाया ॥3॥
हैं अष्ट कर्म के कष्ट बड़े, जो भव में भ्रमण कराते हैं।
जो शरण आपकी आ जाते, वे मोक्ष महापद पाते हैं ॥
अतिशय महान तुमने पाए, तुममें आनंद समाया हैं।
तुम हो ज्ञाता दृष्टा प्रभुवर, तुमने अर्हत् पद पाया है ॥4॥
तुम दिव्य देशना देकर के, निज का स्वभाव दर्शाते हो।
जग में जो भव्य जीव रहते, उनको शिव मार्ग दिखाते हो ॥
जो पथ जिनवर ने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
जो बनता अनुयायी प्रभु का, वह परम मोक्ष पद पाता है ॥5॥

(दोहा)-उच्च धनुष दो सौ रहे, स्वस्तिक लक्षण वान।
हरित रंग में शोभते, जिन सुपार्श्व भगवान ॥

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न विनाशक सप्तम तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)-महिमा गाते आपकी, विशद भाव के साथ।
मुक्ती हो संसार से, हे त्रिभुवन के नाथ! ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री आदिसागरजी, का शांतिसागराचार्यप्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर ॥
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदंत गुरु विराग सिन्धुपद, वंदन मेरा विशद सादर ॥

ॐ ह्रीं सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन ।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन ॥
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश ।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष ॥
दोहा-अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, `विशद` भाव के साथ ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता ।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे ।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते ।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि करशांतिजगाएँ ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी ।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी ।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी ।।

जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि ।।
(शान्तये शान्तिधारा-3 दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)
(कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान ।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान ।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन ।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन ।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव ।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।
(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश ।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष ।।

पुष्पांजलिंक्षिपेत्

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं ।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं ।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं ।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं ।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभयोः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

(तर्ज- आज करें हम.....)

जिन सुपार्श्व की करते हैं शुभ, आरति मंगलकारी ।
दीप जलाकर लाए हैं हम, जिनवर के दरबार ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥1॥
स्वर्ग लोक से इन्द्र अनेकों, नगर बनारस आए ।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, नगरी खूब सजाए ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥2॥
पृथ्वीमति माता की कुक्षि, को प्रभु धन्य बनाए ।
पिता प्रतिष्ठित सुनकर के तब, मन ही मन हरषाए ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥3॥
षष्ठी शुक्ला भादों को प्रभु, स्वर्ग से चयकर आये ।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को प्रभु का, जन्म कल्याण मनाये ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥4॥
दो सौ धनुष की रही ऊँचाई, लक्षण स्वस्तिक जानो ।
बीस लाख पूरब की आयु, जिन सुपार्श्व की मानो ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥5॥
ज्येष्ठ सुदी बारस को प्रभु ने, उत्तम तप को पाया ।
षष्ठी कृष्ण माह फाल्गुण को, केवल ज्ञान जगाया ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥6॥
करें आरती विशद भाव से, वह सौभाग्य जगाएँ-2 ।
सुख शान्ति आनन्द प्राप्त कर, अन्तिम शिव पद पाएँ ॥
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ॥7॥